शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४३ : नई दिल्ली : २९ जनवरी से ४ फरवरी २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद आमेट विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। आमेट में मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम २८ जनवरी से प्रारंभ हो जाएगा। २९ जनवरी को अमृत महोत्सव का तृतीय चरण आयोजित होगा। ३० जनवरी को मर्यादा महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम के साथ महोत्सव का समापन हो जाएगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट में

१६ जनवरी। प्रातः आचार्यवर आमेट से बाहर लगभग ढाई किमी. दूर चामुंडा माता मंदिर के पास स्थित विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय पधारे। वहां विद्यालय के नवीन परिसर का उद्घाटन श्री उत्तमचन्द लोढ़ा एवं श्री अभय लोढ़ा ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे प्रदेश भाजपाध्यक्ष श्री अरुण चतुर्वेदी, रोकड़िया हनुमान मंदिर के महंत श्री नारायणदास एवं आर. एस. एस. के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री हस्तीमलजी हिरण। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व न्यायाधीश डा.बसंतीलाल बाबेल ने अपने विचार रखे। राजसमन्द की विधायक एवं भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती किरण माहेश्वरी, पूर्व विधायक श्री बंशीलाल खटीक, नगरपालिका अध्यक्ष श्री कैलाश मेवाड़ा, उपाध्यक्ष श्री रतनसिंह राठौड़, उपखंड अधिकारी श्रीमती कीर्ति राठौड़ आदि विशिष्ट व्यक्तियों सहित सैकड़ों गणमान्य लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में ज्ञान, आत्मविश्वास एवं संस्कारों के विकास को भारतीय शिक्षा का मुख्य आधार बताया। कार्यक्रम के बाद आचार्यवर पुनः तेरापंथ भवन पधार गए।

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय का लोकार्पण

आज प्रातः अहिंसा समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ। आमेट ज्ञानशाला के बच्चों ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। शाह सोहनलाल मेघराज धाकड़ (शिशोदा-मुम्बई) द्वारा प्रदत्त आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय (ए.टी.एम-हॉस्पिटल ऑन व्हील्स) का लोकार्पण हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित बयालीस फीट लंबी इस वातानुकूलित बस में संपूर्ण पेथालॉजी लैब, दांत, आंख, फेफड़ों की जांच के लिए लगे अत्याधुनिक उपकरणों सहित ईसीजी, वेंटिलेटर व एक्स-रे आदि की सुविधाएं हैं। इस संदर्भ में टी.पी.एफ. के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र श्यामसुखा, महामंत्री श्री इन्द्रचन्द दुधोड़िया, कैम्प संयोजक श्री नवीन चोरड़िया, सुराणा हॉस्पिटल मुम्बई के डा. प्रिंस सुराणा, क्षेत्रीय विधायक श्रीमती किरण माहेश्वरी एवं मुम्बई के पूर्व पुलिस कमिश्नर श्री सुरेन्द्रकुमार ने अपने विचार व्यक्त किए।

चल चिकित्सालय के भेंटकर्ता श्री मेघराज धाकड़ ने अपने वक्तव्य में चिकित्सालय से जुड़ने को अपने परिवार का परम सौभाग्य माना। लोकार्पण से पूर्व श्री सोहनलाल मेघराज धाकड़ ने मोबाइल वैन की चाबी पूज्यवर के सान्निध्य में टी.पी.एफ. के अधिकारियों को भेंट की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हिंसा की दिशा में वह व्यक्ति अग्रसर होता है, जिसकी चेतना विषयासक्त एवं पदार्थ में मूर्च्छित होती है। दुनिया में हिंसा और अहिंसा सतत् चलती रहती है। समग्र रूप से अहिंसक हो पाना मनुष्य के लिए प्रायः कठिन है, क्योंकि हमारा जीवन कुछ अंशों में हिंसा पर आधारित है। हिंसा के तीन प्रकारों में पहली आरंभजा हिंसा खेती-बाड़ी से संबंधित है। यह हिंसा जीवन

निर्वाह के लिए अपेक्षित मानी जाती है। देश की रक्षा, परिवार की सुरक्षा हेतु हिंसा में संपृक्त होना प्रतिरोधजा हिंसा है। इसमें मारना मूल लक्ष्य नहीं, स्वयं की सुरक्षा प्रधान है।

तीसरी है संकल्पजा हिंसा, जो सर्वथा वर्जनीय है। यह आवेग और आवेशवश होती है। अध्यात्म साधना का सार है व्यक्ति में अनासक्ति की चेतना जागे। यश, प्रतिष्ठा से विरत रहकर स्व एवं परकल्याण हेतु कार्य में संलग्न हों।'

प्रसंगवश धनिकों को तीन परामर्श प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'धनवानों के पास धन है, पर वे इसका अहंकार न करें। लक्ष्मी चंचल हैं। जवानी, जीवन और प्राण भी चंचल है। इनका कोई भरोसा नहीं। अंततः धर्म ही हमारा सहगामी होता है। दूसरा परामर्श है धन के प्रति ज्यादा आसक्ति न रखो, संयम करो। तीसरा परामर्श यह कि धन का गलत कार्यों में नियोजन मत करो। हिंसा, ऐशोआराम व नशे में धन का दुरुपयोग मत करो।'

चल चिकित्सालय के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज प्रातःकाल मोबाइल हॉस्पिटल के पास गया। बाहर से देखा--विशाल वाहन है। ज्ञात हुआ कि इसमें अनेक सुविधाएं हैं। समाज के लोगों में सेवा की भावना है। कुछ लोगों में नाम की भावना हो सकती है। इससे ऊपर उठना मुश्किल है। काम तो करे नहीं और नाम चाहे, यह अनुचित माना जाता है। काम के साथ नाम की भावना को सामाजिक दृष्टि से बुरा नहीं माना जाता।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत है। फोरम ने अनेक कैम्प भी आयोजित किए हैं। सोहनलालजी धाकड़ कोई भोला आदमी तो है नहीं। इन्होंने सोचा कि मेरे धन का सदुपयोग हो, अच्छा काम हो। वैसे यह लौकिक उपकार है। दुनिया में लौकिक उपकार का अपना महत्त्व है। हम लोग लोकोत्तर कार्य में अपने समय का नियोजन करते हैं। उपयोगी कार्य में अर्थ के नियोजन को सार्थक व गलत कार्य में अर्थ के नियोजन को निरर्थक माना गया है। यह मेडिकल वैन सामाजिक संदर्भों में बहुत उपयोगी हो सकती है। कहा जा सकता है कि यह एक विशिष्ट प्रकल्प सामने आया है।' कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी एवं टी.पी.एफ. के सहसंयोजक श्री सलिल लोढ़ा ने किया।

मध्याह्न में दो बजे प्रतिवर्ष की भांति साधु-साध्वियों की पहली सामूहिक संगोष्ठी हुई, जिसमें महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के अभिभाषण के बाद आचार्यवर ने व्यवस्था के संदर्भ में सत्यं शिवं सुन्दरम् की चर्चा करते हुए दिशा निर्देश प्रदान किए।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर दर्शनाचार प्रवचनमाला का शुभारंभ

१७ जनवरी। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संदर्भ में दर्शनाचार प्रवचनमाला का आज शुभारंभ हुआ। २५ जनवरी तक चलनेवाली इस प्रवचनमाला के अंतर्गत आज का विषय था--'सम्यक्त्व का दीया कैसे जले?'

विषय का प्रवर्तन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'अंधकार पीटने से नहीं जाता। वह दीपक जलाने से मिटता है। कोई भी ऐसा जीव नहीं जो कभी मिथ्यात्वी न रहा हो। हम अपने मूल घर मिथ्यात्व में अनंत काल से रहे हैं। इस मूल घर को छोड़ने का तात्पर्य है सम्यक्त्व में आना। अनादि काल से प्रवहमान मिथ्यात्व के अंधकार में कषाय के मंद होते-होते सम्यक्त्व का दीया जल उठता है।'

सम्यक्त्व के पांच प्रकारों--औपशमिक, क्षयोपशमिक, क्षायिक, सास्वादन व वेदक का विशद विवेचन करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अनंतानुबंधी कषाय चतुष्क के विलय से सम्यक्त्व प्राप्त होता है। व्यावहारिक दृष्टि से गुरुधारणा भी सम्यक्त्व प्राप्ति का उपाय है। अर्हत देव, शुद्ध साधु गुरु व जिन प्रज्ञप्त धर्म की अवधारणा रूपी गुरुधारणा को मैं बहुत महत्त्वपूर्ण उपक्रम मानता हूं। इसमें श्रद्धा व व्रत--दोनों का योग है। सम्यक्त्व का संबंध श्रद्धा से है। श्रद्धा की गाय को ज्ञान के खूंटे से बांधना आवश्यक है। गुरुधारणा एक प्रकार से गुरु आस्था का निदर्शन है। श्रद्धा आदमी को खतरे से बचाने में बहुत उपयोगी है।'

प्रवचन के अनंतर विषय से संबंधित साधु-साध्वियों एवं समणियों के द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों का आचार्यवर ने सटीक समाधान किया। आचार्यवर की सन्निधि में रात्रि में आमेट ज्ञानशाला द्वारा आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसमें आचार्यश्री महाश्रमण के जन्म से लेकर दीक्षा व गुरु दर्शन तक के प्रसंग को बच्चों ने शानदार

प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमारजी का इसमें निष्ठापूर्ण श्रम रहा। प्रशिक्षिकाओं में श्रीमती मनीषा छाजेड़, सुमीता चोरड़िया, सज्जन मेहता, प्रिया हिंगड़, आयुषी हिंगड़, स्वीटी दक आदि का योग रहा।

आदर्श कौन?

१८ जनवरी। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में समायोजित दर्शनाचार प्रवनमाला का दूसरा दिन। आदर्श कौन? इस विषय पर आधारित अपने प्रवचन में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'आदर्श वही होना चाहिए जो अपने से उच्च हो। जहां हमें पहुंचना है, उसे आदर्श के रूप में देखा जाना चाहिए। जैन धर्म में अर्हत् को आदर्श माना गया है। वे अध्यात्म जगत के शिरोमणि पुरुष होते हैं। अर्हत् वह आत्मा होती है, जो चार घनघाती कर्मों से मुक्त होती है। हालांकि चार घनघाती कर्मों से मुक्त तो केवली भी होता है। केवली और अर्हत् में काफी समानता है, किन्तु यह अन्तर भी है कि केवली तो मूक यानी न बोलने वाला भी बन सकता है, परन्तु तीर्थंकर तो प्रवचन करने वाले प्रवक्ता होते हैं। उनकी वीतरागता हमारे लिए साध्य और वांछनीय है। वे हमारे देव हैं। स्वयं वीतराग हैं और वीतरागता का पथदर्शन प्रदान करते हैं। अपने आदर्श के अनुरूप वीतराग बनने का प्रयत्न करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'महापुरुषों की जीवनियां पढ़ना अच्छा है। उससे व्याख्यान की सामग्री प्राप्त हो सकती है। किन्तु और ज्यादा अच्छी बात यह होगी कि उनकी विशेषताओं को आदर्श के रूप में देखें और अपने जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास करें।'

आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त मुनि रमेशकुमारजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए अपने सहवर्ती मुनि चैतन्यकुमारजी के साथ गीत का संगान किया। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष पर साहित्य समिति द्वारा समायोजित निबन्ध लेखन और गीत निर्माण प्रतियोगिता के परिणाम प्रस्तुत किए। मराठवाड़ा की यात्रा कर लौटी समणी निर्वाणप्रज्ञा ने अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। भुवाणा-उदयपुर चतुर्मास परिसंपन्न कर मुनि संजयकुमारजी आदि संत आज सायंकाल पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे।

मार्गदर्शक कौन?

१६ जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला के अंतर्गत आज का विषय था--मार्गदर्शक कौन? परम श्रद्धेय आचार्यवर ने निर्धारित विषय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में लक्ष्य निर्धारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अर्हत या सिद्ध हमारे आदर्श हैं। इसका तात्पर्य है वीतरागता हमारा मुख्य लक्ष्य है। मंजिल तक पहुंचने के लिए सही लक्ष्य, सही मार्ग और अच्छे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। गुरुधारणा में ये तीनों चीजें आ जाती हैं। देव अर्थात अर्हत् या सिद्ध हमारा लक्ष्य है। धर्म की साधना उसका मार्ग है और गुरु मार्गदर्शक होते हैं। इस दुनिया में गुरु का बहुत महत्त्व है, क्योंकि हमें जहां पहुंचना है, उसका रास्ता बताने वाले गुरु होते हैं। एक बाल मुनि को कैसे समझाना, एक प्रबुद्ध मुनि को कैसे समझाना, अबुद्ध को कैसे समझाना है, गुरु इसमें निपुण होते हैं। उनके समझाने का तरीका विलक्षण होता है। प्रश्न हो सकता है कि गुरु कौन होता है? समाधान दिया गया--शुद्ध साधु गुरु होता है। वैसे तो सभी शुद्ध साधु गुरु हैं, किन्तु तेरापंथ की परम्परा में आचार्य को गुरु का स्थान दिया गया है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'गुरु और शिष्य का आत्मीय संबंध होता है अथवा होना चाहिए। गुरु के प्रति कभी दुराव नहीं होना चाहिए। हमारे धर्मसंघ में सबसे पहले संबंध किसी के साथ है तो गुरु के साथ है या संघ के साथ है। गुरु संघ के ही प्रतीक हैं। उनके सामने सब कुछ गौण है। व्यक्ति विशेष नहीं, संघ और गुरु ही आस्था के केन्द्र होने चाहिए।' पूज्यवर ने इस संदर्भ में मुनि जिनेशकुमारजी की संघनिष्ठा के प्रसंग का उल्लेख किया।

दिल्ली चतुर्मास संपन्न कर आज प्रातः गुरु सन्निधि में पहुंचे मुनि राकेशकुमारजी ने पूज्यवर को प्रथम बार आचार्य के रूप में वर्धापित किया। मुनिश्री ने कार्यक्रम में अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। उनके सहवर्ती मुनि दीपकुमारजी ने गीत का संगान कर आराध्य की अभ्यर्थना की। मुनि संजयकुमारजी ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। साध्वी सौम्ययशाजी ने अपनी दीक्षाभूमि

पर पूज्यवर का अभिनंदन किया। आमेट तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पूज्यवर को संकल्पों का उपहार समर्पित किया गया।

आचार्यवर ने इन संदर्भों में कहा--'मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद प्रथम बार पधारे हैं। आप हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ संत हैं। आपने देश के सुदूर प्रान्तों में विचरण किया और खूब कार्य किया। अणुव्रत के क्षेत्र में तो आपका विशेष योगदान है। अब तो कुछ अवस्था आ गई। परन्तु जब मैं सुनता हूं या मुझे जानकारी मिलती है कि वृद्ध संतों की सेवा अच्छी हो रही है तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मेरे लिए यह एक निश्चिन्तता का कारण बनता है। मुनि सुधाकरजी और मुनि दीपकुमारजी आपके दो सहयोगी हैं। मुनि सुधाकरजी ने वक्तृत्व में विकास किया है। मुनि दीपकुमारजी ने सौ बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र भेंट किए। यह एक अच्छा ठोस कार्य है। दोनों संत आगम आदि का स्वाध्याय भी करें। खूब सेवा और अच्छा कार्य करते रहें। मुनिश्री संजयकुमार स्वामी भी कल पधार गए। आप शासनश्री मुनि सोहनलालजी स्वामी (श्रीडूंगरगढ़) के साथ रहे हुए हैं। मुनि प्रकाशकुमारजी भी इनके साथ हैं, जो दीक्षा पर्याय में मुझसे ठीक छोटे हैं। मुनि सिद्धार्थकुमारजी पहले समण थे। समण के रूप में उन्होंने विदेश की यात्राएं कीं। शान्त स्वभाव के संत प्रतीत हो रहे हैं। अच्छा विकास और अच्छी साधना करते रहें।'

मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ

२० जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला का चौथा दिन। 'मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ' विषय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'मंजिल निश्चित होने पर कुशल मार्गदर्शक मिलने के बाद सही मार्ग पर चलने की अपेक्षा होती है। मार्ग भी है, मार्ग बताने वाला भी है, मंजिल भी निश्चित है, परन्तु उस दिशा में गति नहीं होती है तो गंतव्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। व्यक्ति में चलने का पुरुषार्थ भी होना चाहिए। गति तीव्र है या मंद, इसकी अपेक्षा गति में निरंतरता है या नहीं, यह ज्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न है। भले ही धीमी गति से चलें, पर उसमें स्थायित्व होना चाहिए। चलने से पूर्व पथ की निर्धारणा आवश्यक होती है। पथ यदि सही है तो चलते-चलते अवश्य ही मंजिल तक पहुंचा जा सकता है।'

पूज्यवर ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा--'वीतरागता तक पहुंचने के लिए वीतराग जिनेश्वर द्वारा प्रदत्त धर्म के पथ पर चलने की आवश्यकता होती है। भगवान ने समता को धर्म कहा है। धर्म का सारांश है राग-द्वेष से मुक्ति अर्थात वीतरागता का अभ्यास। हमें अर्हत् जैसे देव मिले हैं, शुद्ध साधु जैसे गुरु मिले हैं और केवली प्रज्ञप्त धर्म मिला है। हमारा कर्तव्य है कि हम वीतरागता को आत्मसात् करने का प्रयत्न करें। चाहे साधु हो या गृहस्थ, वीतरागता की साधना सभी के लिए करणीय, आचरणीय और अनुमोदनीय है। वीतरागता की साधना की जाती है तो धर्म की साधना स्वतः हो जाती है।'

आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त मुनि सुधाकरजी ने काव्य स्वरों में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। आज मध्याह्न में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि सर्वोदयसागरजी और मुनि गुणवल्लभजी ने पूज्य आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित होकर पूज्यवर से विभिन्न विषयों पर वार्तालाप किया। सायंकाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान के क्षेत्रीय प्रचारक श्री कैलाशजी और जिला प्रचारक श्री अमितजी ने पूज्यवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

बोधि सम्मान समर्पण समारोह

आज रात्रि में परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में बोधि सम्मान समर्पण समारोह समायोजित हुआ। भंवरलाल कर्णावट फाउंडेशन द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला यह सम्मान इस वर्ष सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश उदयपुर श्री सुन्दरलाल मेहता और श्री कन्हैयालाल कच्छारा को दिया गया। कार्यक्रम में स्व. श्री भंवरलालजी कर्णावट की स्मृति में प्रकाशित 'दृढ़ संकल्पी' नामक ग्रंथ का विमोचन किया गया। ग्रंथ के संपादक श्री राधेश्याम मेहता ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कर्णावट परिवार के साथ स्मृति ग्रंथ पूज्यवर को भेंट किया। श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। श्रीमती लता कर्णावट एवं कमल कर्णावट द्वारा प्रशस्तिपत्रों के वाचन के पश्चात् वरिष्ठ महानुभावों ने श्री सुन्दरलाल मेहता एवं श्री कन्हैयालाल कच्छारा को स्मृतिचिह्न एवं पुरस्कार राशि का चैक प्रदान किया। दोनों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपने स्वीकृति

भाषण में पूज्यवर की कृपा और आशीर्वाद को अपनी सफलता का आधार बताया।

इस अवसर पर परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'भंवरलालजी कर्णावट को मैंने देखा है। 'दृढ़ संकल्पी' उनके व्यक्तित्व के अनुरूप विशेषण है। उनका दीर्घ अनशन उनके परिवार के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण मेवाड़ के लिए गौरव का विषय है। 'दृढ़ संकल्पी' ग्रंथ से पाठकों को अध्यात्म की प्रेरणा मिलती रहे।

सुन्दरलालजी मेहता परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा 'प्रामाणिकप्रवर' के रूप में सम्बोधित हैं। यह अपने आप में महत्त्वपूर्ण संबोधन है। इसे प्राप्त करना मैं बड़ी बात मानता हूं। कई बार व्यक्ति बड़ा और सम्मान छोटा हो जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान छोटी बात और साधना बड़ी बात है।

कन्हैयालालजी कच्छारा समझदार और मेवाड़ के वरिष्ठ श्रावक हैं। साधु-साध्वियों के संदर्भ में भी इनका उपयोग होता है। संघ की सेवा करने वालों को बोधि सम्मान दिया गया। बोधि शब्द महत्त्वपूर्ण शब्द है। सभी बोधि के पथ पर प्रवर्द्धमान रहें।'

सम्यक्त्व की पहचान

२१ जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला का पांचवां दिन। आज का विषय था--सम्यक्त्व की पहचान। परमपूज्य आचार्यवर ने निर्धारित विषय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीव अनादि काल से जन्म और मरण की यात्रा में यात्रायित है। इस यात्रा में वह क्षण धन्य होता है, जब प्राणी सम्यक्त्व को प्राप्त होता है। सम्यक्त्व के बिना जीव आभ्यंतर अंधकार में रहता है और सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर उसे एक नया आलोक प्राप्त हो जाता है।

सम्यक्त्व की पहचान के पांच लक्षण हैं--शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्तिक्य। शम का अर्थ है क्रोध आदि कषायों का उपशमन। जिसका कषाय उपशान्त है, बहुत उग्र नहीं है, वह व्यक्ति सम्यक्त्वी हो सकता है। सम्यक्त्व का दूसरा लक्षण है--संवेग अर्थात मोक्ष की अभिलाषा। मोक्ष में जाने की तीव्र अभीप्सा को संवेग कहा गया है। निर्वेद अर्थात् संसार से विरक्ति सम्यक्त्व की पहचान का तीसरा लक्षण है। जिसमें संसार और सांसारिक भोगों से विरक्त बनने की भावना है, वह सम्यक्त्वी हो सकता है। अनुकंपा सम्यक्त्व का चौथा लक्षण है। प्राणिमात्र के प्रति जिसमें दया का भाव उत्पन्न हो गया, उसे सम्यक्त्वी कहा जा सकता है। अनुकंपा की चेतना मनुष्यों में ही नहीं, पशुओं में भी हो सकती है। हाथी के भव में मेघकुमार की अनुकंपा इसका उदाहरण है। सम्यक्त्वी वह है, जिसमें अनुकंपा का विकास हो जाता है।

सम्यक्त्व की पहचान का पांचवां और अन्तिम लक्षण है--आस्तिक्य अर्थात् आत्मा, कर्म, कर्मफल, पुण्य-पाप आदि में विश्वास होना। आत्मा का शाश्वत अस्तित्व है। पुण्य-पाप आदि का फल मिलता है--इस आस्तिकवाद में आस्था का होना भी सम्यक्त्वी का एक लक्षण है। नि चय में तो सम्यक्त्वी की पहचान विशिष्ट ज्ञानी ही कर सकता है, किन्तु व्यवहार के धरातल पर इन पांच लक्षणों के आधार पर किसी को अनुमानतः सम्यक्त्वी कहा जा सकता है। सम्यक्त्व की निर्मलता के लिए इन पांच लक्षणों को परिपुष्ट बनाएं।'

पूज्य आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त जिज्ञासा-समाधान के क्रम में साधु-साध्वियों ने आचार्यवर से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि सर्वोदयसागरजी भी उपस्थित थे। उनके सहयोगी मुनि गुणवल्लभजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए पूज्यवर के दर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। आज प्रातः घरों में चरण स्पर्श के क्रम में तेरापंथ तुलसी विहार भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बना।

जीवन विज्ञान विद्यार्थी सेमिनार

प्रातःकालीन कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में जीवन विज्ञान अकादमी आमेट द्वारा जीवन विज्ञान विद्यार्थी सेमिनार की समायोजना की गई, जिसमें स्थानीय बारह विद्यालयों के २३६० विद्यार्थी संभागी बने।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को अपना पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा--'किशोर अवस्था ज्ञानार्जन की अवस्था होती है। चार आश्रमों में पहला है ब्रह्मचर्याश्रम। इस अवस्था में ज्ञान के विकास

और सदाचार के संस्कारों को परिपुष्ट बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। बालकों के सामने संभावित लंबा भविष्य होता है। यदि संस्कार अच्छे बन जाएं तो जीवन बहुत अच्छा बन सकता है। विद्यार्थियों में नैतिकता, चरित्रसंपन्नता, ज्ञानवत्ता और पवित्र मार्ग पर चलने का संकल्प हो तो वे महान् बन सकते हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को शिक्षकों और अभिभावकों का सतत् मार्गदर्शन मिलता रहे।' पूज्यवर की प्रेरणा से विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर के मंगल उद्‌बोधन के पश्चात् शासनश्री मुनि किशनलालजी ने विद्यार्थियों को जीवनविज्ञान के विविध प्रयोगों का प्रशिक्षण दिया।

साध्वीप्रमुखाजी का ४१वां चयन दिवस

२१ जनवरी। संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का ४१वां चयन दिवस। प्रातः सूर्योदय के साथ महाश्रमणीजी साध्वीवृन्द के साथ गुरु दर्शनार्थ आचार्यवर के उपपात में पहुंचीं। गुरु वंदना के तत्काल बाद शुरू हो गया बधाइयों और शुभकामनाओं का सिलसिला। साध्वीवृन्द, समणीवृन्द और मुनिवृन्द ने गीतों के द्वारा महाश्रमणीजी को वर्धापित किया।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'मैं ज्ञानसंपन्न और आचारसंपन्न व्यक्तित्व का अभिनंदन करती हूं। वे लोग विरले होते हैं, जिन्हें ज्ञान और आचार--ये दोनों सम्पदाएं प्राप्त होती हैं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी दोनों संपदाओं से संपन्न हैं। आपको हजारों-हजारों गाथाएं कंठस्थ हैं। आज भी आप कंठस्थ ज्ञान का निरंतर पारायण करती रहती हैं। आपके मन में कंठस्थ ज्ञान के प्रति आकर्षण बना हुआ है। ज्ञान के साथ-साथ आपकी आचारनिष्ठा भी अनुकरणीय है। आज के दिन मैं यही मंगलकामना करती हूं कि आपकी ज्ञान संपदा और आचार संपदा साध्वी समाज में भी संक्रान्त हो, जिससे हम पूज्यवर के सपनों को साकार कर सकें।'

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने साध्वीप्रमुखाजी के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा--'दायित्व के चालीस वर्ष संपन्न हो रहे हैं तथा जीवन के भी सात दशक पार कर साध्वीप्रमुखाजी ने आठवें दशक में प्रवेश कर लिया है। जब तक व्यक्ति में ग्रहण करने की क्षमता विद्यमान रहती है, तब तक वह युवा रहता है। महाश्रमणीजी प्रतिदिन कुछ न कुछ नया ग्रहण करती रहती हैं,। गुरुदेव तुलसी ने बहुत सोच-समझकर आपका चयन किया था। आज जिस तरह युग के विकास की गति आगे बढ़ रही है, उसमें संघ के सदस्य बहुश्रुतता के साथ आगे बढ़ें, यह जरूरी है। इस शताब्दी में मातृशक्ति का बहुत विकास हुआ है और हो रहा है। साध्वीप्रमुखाजी आचार्यवर के इंगित के अनुसार विकास के क्रम को आगे बढ़ा रही हैं। अभी तो आप ४१वें पायदान पर हैं। आगे तो माला के सुमेरु तक पहुंचना है। अपने स्वास्थ्य की संभाल रखते हुए तथा ग्रहणशीलता के क्रम को आगे बढ़ाते हुए आप सुमेरु को प्राप्त करें, यही मंगलकामना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर से आशीर्वाद की कामना करते हुए कहा--'आज मैं चार दशकों की यात्रा पूरी कर आचार्यवर के सामने उपस्थित हूं। मैं क्या हूं, यह मैं नहीं जानती। इतना कह सकती हूं कि जो कुछ भी हूं, वह तेरापंथ धर्मसंघ व आचार्यत्रयी के कारण हूं। मैं गुरुदेवश्री तुलसी की कृति के रूप में पहचानी जाती हूं। मैंने कभी भी स्वयं को प्रशासक की भूमिका में नहीं देखा। गुरु का जैसा भी इंगित मिलता है, उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करती हूं। मुझे धर्मसंघ का आत्मीय भाव उपलब्ध है। संतगण मेरे बारे में सकारात्मक सोचते हैं। साध्वियां मेरे निर्देश को मान्य कर कार्य में संलग्न होती हैं। आचार्यवर से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरी ग्रहणशीलता बढ़ती रहे। अवस्था से मैं कहीं भी पहुंचूं, किन्तु मन में निराशा और हताशा न आए। आचार्यवर का जो भी इंगित मिले, उसके अनुसार संघ की सेवा करती रहूं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'माघ कृष्णा त्रयोदशी का दिन साध्वी समाज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। श्रीमज्जयाचार्य ने हमारे धर्मसंघ में साध्वी समाज की व्यवस्था के लिए साध्वीप्रमुखा की नियुक्ति के रूप में एक नया आयाम जोड़कर उत्तरवर्ती आचार्यों के कार्य भार को हल्का बनाने का प्रयास किया। विशाल साध्वी समुदाय की व्यवस्था का दायित्व प्राप्त होना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। साध्वीप्रमुखा आचार्यों की एक आंख होती है। इसलिए संघ में उनका क्या महत्व है, इसे आसानी से समझा जा सकता है।'

अतीत की स्मृति करते हुए परमाराध्य आचार्यवर ने कहा--'एक समय था, जब मैं वैरागी के रूप में, फिर

बाल मुनि के रूप में, उसके बाद महाश्रमण के रूप में, तत्पश्चात युवाचार्य के रूप में साध्वीप्रमुखाजी के सामने था और आज अन्य रूप में हूं। (साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'जब आप वैरागी के रूप में गुरुदेव की सन्निधि में आए, तब गुरुदेव ने मुझसे पूछा कि 'टाबर कियां लागै है?' मैंने निवेदन किया--'गुरुदेव! टाबर तो ठीक ही लागै है)' मेरे लिए तो साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एक बहुत बड़ा आश्वास व विश्वास का स्थान है। इनकी विनयशीलता विशिष्ट है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ--दोनों के शासनकाल में मैंने इन्हें देखा। आज भी वही रूप मैं इनमें देख रहा हूं। (साध्वीप्रमुखाजी ने खड़े होकर विनय भाव से निवेदन किया--मेरे लिए आप ही आचार्य तुलसी हैं) कभी कोई संघीय निर्णय साध्वीप्रमुखाजी के प्रतिकूल भी हो जाए, उन निर्णयों को भी महत्व के साथ स्वीकार कर लेना विशिष्ट बात है। ऐसी स्थिति में भी इनमें वही विनय और समर्पण का भाव दृष्टिगोचर होता है। ऐसी योग्य साध्वीप्रमुखा का मिलना आचार्यों के सौभाग्य का सूचक होता है। युवाचार्य हों या न हों, किन्तु साध्वीप्रमुखा तो प्रायः अनवरत रहती हैं। इनमें ज्ञान व विनय के प्रति निष्ठा है। साध्वीप्रमुखा का सबसे बड़ा दायित्व होता है--साध्वियों का अच्छा विकास करना। साध्वीप्रमुखाजी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए धर्मशासन की सेवा करती रहें।'

मुख्यनियोजिकाजी के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मुख्यनियोजिकाजी अब तपस्विनी बन रही हैं। तपस्या में शरीर का अच्छा योग है तथा मेरा भी इन्हें सहयोग मिलता है। ये भी अच्छी प्रबुद्ध साध्वी हैं। समणियों के व्यवस्था कार्य में इनका बड़ा योग रहता है। इनमें भी समर्पण भाव है। अच्छा विकास किया है और विकास करती रहें।'

रात्रि में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की सन्निधि में वर्धापना का अवशिष्ट कार्यक्रम रहा, जिसमें साध्वियों, समणियों और श्रावक समाज ने साध्वीप्रमुखाजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर अपनी भावाभिव्यक्तियां दीं।

२२ जनवरी। प्रातः पूज्य आचार्यवर श्री जयसिंह श्याम गोशाला पधारे। वहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में गोशाला अध्यक्ष ठाकुर श्यामसिंहजी राठौड़ ने स्वागत भाषण किया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा--'हमारी सृष्टि का एक उपयोगी प्राणी है गाय। लोगों के मन में गाय के प्रति सहज ही अनुराग की भावना देखी जा सकती है। कुछ लोग गोभक्त भी होते हैं और गायों की सेवा करते हैं। वह एक लौकिक सेवा है। इसके साथ पवित्रता बनी रहे, यह अपेक्षित है।'

अहिंसा समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में जागरण जनसेवा मंडल वागदरी-डूंगरपुर द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय के संदर्भ में जानकारी दी गई। भारतीय इतिहास संकलन समिति द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'भारतीय इतिहास के जैन स्रोत' का आज लोकार्पण हुआ। समिति के अध्यक्ष डा. के. एस. गुप्ता, महामंत्री श्री छगनलाल बोहरा ने ग्रंथ आचार्यवर को समर्पित किया। १-३ अक्टूबर २००७ को उदयपुर चतुर्मास में आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में समायोजित 'भारतीय इतिहास के जैन स्रोत' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्रों का इसमें संकलन है।

लेखन में हो मौलिकता एवं गंभीरता

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के बारहवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में मानसिक व वाचिक कष्ट कदाचित् आ जाए तो उसे सहन करना चाहिए। साधु-साध्वियों एवं साधकों को तो विशेषतः कष्टसहिष्णु होना चाहिए। सहनशील व्यक्ति के जीवन में अहिंसा व समता का अवतरण संभव हो सकता है। मौसमजन्य, परिस्थितिजन्य, शारीरिक, मानसिक व भावात्मक कठिनाइयों को आत्मबल से सहा जा सकता है। भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी के जीवन में कितने कष्ट आए, संघर्ष आए, पर वे सब कुछ सहन करते हुए अपने स्वीकृत पथ पर डटे रहे। कल्याण के मार्ग में आने वाली विघ्न-बाधाओं को व्यक्ति आत्मबल व मनोबल से स्वयं पर हावी न होने दे।'

भेंट की गई पुस्तक के संदर्भ में अपने नीतिपरक अभिप्रेरक उद्‌बोधन में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'वही लेखन स्तरीय हो सकता है, जिसमें मौलिकता एवं गंभीरता होती है। कोई भी पुस्तक प्रकाश में आती है तो वह विद्वानों और पाठकों के लिए तृप्तिदायक हो, तभी वह महत्ता से परिपूर्ण होती है। ग्रंथ चाहे संख्या में कम हों, पर उसका प्रतिपाद्य ऐसा हो, जो सबके लिए उपयोगी बन सके। संख्यापूर्ति के लिए लिखना कोई बड़ी बात

नहीं है। उससे होगा क्या, सिवाय इसके कि एक नाम और बढ़ जाएगा और वह प्रायः उसके लिए ही मनस्तोषकारी हो सकता है। ग्रंथ संख्या बढ़ाने की अपेक्षा स्वयं के लेखन में परिष्कार करना चाहिए। परिष्कार तभी संभव हो सकता है, जब पढ़ने व ग्रहण करने की मनोवृत्ति हो। मैं ग्रंथ की गंभीरता को अधिक महत्व देता हूं। हमारे हाथों में गंभीर ग्रंथ होंगे तो चिंतन व लेखन में गाम्भीर्य का प्रस्फुटन हो सकेगा।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'तेरापंथ के तीसरे आचार्य ऋषिराय की आज महाप्रयाण तिथि है। ऋषिराय जयाचार्य के गुरु थे। उन्हें संघ सेवा हेतु अच्छा समय मिला। आचार्य भिक्षु व आचार्य भारमलजी--इन दो आचार्यों के पास रहकर वे संघ व्यवस्था में काफी निष्णात बन गए। छोटी उम्र में ही समग्र दायित्व उन पर आ गया।' आचार्यवर ने ऋषिराय के जीवन से संबंधित अनेक प्रसंगों का उल्लेख किया और बताया कि आज के दिन ही गुरुदेव तुलसी की मातुश्री ऋजुमना साध्वी वदनाजी का स्वर्गवास हुआ था। वे संघ की सर्वाधिक आयुष्मती साध्वी थीं।

साध्वियों के साहस की सराहना करते हुए करुणामूर्ति आचार्यवर ने कहा--'हमारी साध्वियां कितनी लंबी-लंबी यात्राएं करती हैं। वे सुदूर क्षेत्रों में जाती हैं और वहां काम करती हैं। लोगों की संभाल करती हैं और उन्हें धर्म का उद्यम करने के लिए प्रेरित करती हैं। यात्रा के साथ साध्वियां धर्मोपकरणों का निर्माण भी करती हैं। संतों को कई उपकरण पूर्णतया या प्रायः साध्वियों से प्राप्त होते हैं। इस तरह साध्वियों का कितना उपकार है। गोचरी आदि व्यवस्थाओं में साध्वियों को प्राथमिकता दें। हमारे संत भी कितनी-कितनी संघीय गतिविधियों को संभाल रहे हैं, कितना कार्य कर रहे हैं।'

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में २१-२२ जनवरी को तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। २१ जनवरी को लगभग ७० साधु-साध्वियों के स्वास्थ्य का परीक्षण आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय में किया गया। २२ जनवरी को यह उपक्रम आम जनता के लिए रखा गया, जिसमें आसपास के क्षेत्रों से आए लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

सम्यक्त्व के दूषण

२३ जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला के अंतर्गत 'सम्यक्त्व के दूषण' विषय पर अपने अभिप्रेरक उद्‌बोधन में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'गर्मी में पसीना आने से, गन्दगी से तथा कई दिनों तक वस्त्र प्रक्षालन न करने पर कपड़ों में मलिनता आ जाती है। पर्यावरण प्रदूषण की स्थिति भी आ जाती है। कषाय का योग मिलने पर विचार कलुषित हो जाते हैं। सम्यक्त्व निर्मल और उच्च है। इसे विजातीय तत्त्व बाधित करते हैं, तब यह दूषित हो जाता है। सम्यक्त्व के पांच दूषण हैं। ये पांचों दूषण परित्याज्य हैं।' आचार्यवर ने पांचों दूषणों--शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, परपाषाण्ड प्रशंसा एवं परिचय का विशद विवेचन करते हुए कहा--'देव, गुरु, धर्म के प्रति व तत्त्वों के प्रति शंका होती है तो सम्यक्त्व कमजोर हो जाता है। जिस देव, गुरु व धर्म को स्वीकार किया है, उसके प्रति हमारी आस्था मजबूत होनी चाहिए। शंका से आदमी को बचना चाहिए। मिथ्याचार व लक्ष्य से विपरीत दृष्टिकोण के प्रति रुझान होना कांक्षा है। यह सम्यक्त्व के लिए बड़ा खतरा है। धर्म की करणी के प्रति संदेह करना विचिकित्सा है। इससे तथा मिथ्यादृष्टि व व्रतभ्रष्ट पुरुषों की प्रशंसा व परिचय से बचें। हमारे सम्यक्त्वरूपी रत्न से किसी अन्य रत्न की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि चारित्र भी सम्यक्त्व के बिना नहीं हो सकता। चरित्र जैसी निर्मल चीज के आधारभूत सम्यक्त्व के प्रति हमारे मन में निष्ठा पुष्ट रहे।'

विभूषित करें सम्यक्त्व को

२४ जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला के अन्तर्गत आज का विषय था--'इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं।' विषय का सटीक विवेचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'विवेच्य विषय आर्षवाणी का महत्त्वपूर्ण सूक्त है। इसके भीतर आस्था का भाव है। शब्द जड़ होते हैं, किन्तु शब्द में जो अर्थ छिपा होता है, वह बलवान और महत्त्वपूर्ण होता है। अर्थ के आधार पर शब्द का मन पर प्रभाव भी होता है। शब्द और अर्थ का परस्पर में गहरा संबंध है। अर्थहीन या अर्थ की अवगति के अभाव में शब्द का अर्थ से होने वाला असर नहीं होता। अर्थ के अवबोध से उसका विशेष असर हो सकता है। निर्ग्रंथ प्रवचन अर्थात वीतराग का प्रवचन सत्य ही होता है। उसमें आशंका को कोई अवकाश नहीं है। वीतराग प्रवचन ही जैन शासन है। सम्यक्त्व के संदर्भ में यह

महत्त्वपूर्ण सूत्र है। ऐसे सूत्रों की अनुप्रेक्षा की जाए तो हमारा सम्यक्त्व और अधिक निर्मल बन सकता है।'

योगशास्त्र में वर्णित सम्यक्त्व के पांच भूषण--स्थैर्य, प्रभावना, भक्ति, कौशल एवं तीर्थ सेवा की पूज्य आचार्यवर ने विशद विवेचना की। आपने आगे कहा--'व्यक्ति कई प्रकार के आभूषण पहनता है और उससे शरीर शोभित हो जाता है। साधु निराभूषण होते हैं, फिर भी सहज शोभायमान होते हैं। सम्यक्त्व हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक है। उसको भी आभूषण पहनाया जाए। मंदिरों में प्रतिमा को विभूषित किया जाता है। हम सम्यक्त्व की प्रतिमा को विभूषित करने का प्रयास करें। इसके लिए पांच आभूषण निर्दिष्ट हैं। पहले भूषण में स्वयं धर्म में स्थिर रहना और दूसरों को धर्म में स्थिर करना होता है। दूसरे प्रभावना भूषण में तपःसाधना, प्रवचन आदि के द्वारा धर्म की महिमा को बढ़ाना होता है। अर्हत्, सिद्ध, आचार्य एवं धर्म शासन के प्रति भक्ति का भाव होना तीसरा भक्तिभूषण है। जिन शासन, तत्त्वज्ञान की जानकारी रखना कौशलभूषण है। पांचवां भूषण तीर्थसेवा है, जिसमें साधु-साध्वियों की सेवा, उपासना एवं श्रावक वर्ग की आध्यात्मिक सेवा करना होता है। इन आभूषणों से सम्यक्त्व को विभूषित कर सकते हैं।

प्रवचन से पूर्व दौलतगढ़ कन्यामंडल की गीत प्रस्तुति के बाद तेरापंथ किशोरमंडल आमेट द्वारा भरवाए गए नशामुक्ति के तीन सौ पचास फार्म पूज्यवर को भेंट किए गए। मुम्बई तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा ने साध्वी सत्यप्रभाजी की प्रेरणा से भरे गए ५११ बारहव्रत के फार्म भेंट किए।

संघनिष्ठा का विकास

२५ जनवरी। दर्शनाचार प्रवचनमाला के अन्तर्गत आठवां और अन्तिम विवेच्य विषय था--संघनिष्ठा का विकास। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने निर्धारित विषय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दो प्रकार की साधना पद्धतियां निर्दिष्ट हैं--वैयक्तिक साधना, संघबद्ध साधना। हमने दूसरी साधना पद्धति स्वीकार की है। संघ बहुत बड़ा आलंबन होता है। उससे कठिनाई में सहारा भी मिलता है। विशेष स्थिति में पथदर्शन भी प्राप्त हो जाता है। समूह का अपना बल भी होता है। हमारे धर्मसंघ की साधना काफी व्यवस्थित है। महामना आचार्य भिक्षु के द्वारा रचित विधान हमारे लिए वरदान है। उन्होंने ऐसी मर्यादाओं का निर्माण किया, जो सहज सुरक्षा प्रहरी का कार्य करती है।

जिस संघ में हम जी रहे हैं, हमारे मन में उसके प्रति निष्ठा का भाव होना चाहिए। 'मैं गण का हूं और गण मेरा है'--यह ऐक्यभाव संघ के सदस्यों में रहना चाहिए। सदस्यों द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं होना चाहिए, जिससे संघ का अहित हो। तुच्छ बातों को लेकर संघ को छोड़ने का विचार सपने में भी न लाएं। संघ में ही जियेंगे, सौ वर्षों बाद संघ में ही मरेंगे--यह निष्ठाभाव पुष्ट रहे। ऐसा शासन हमें सौभाग्य से मिला हुआ है। कोई निकट का व्यक्ति भी संघ से अलग होने का विचार करे तो उसका साथ नहीं दें। हमारा संबंध व्यक्ति के साथ नहीं, शासन और शासनपति के साथ है। शासन के आधार पर हमने घर छोड़ा है। हम जिन शासन, भिक्षु शासन की शरण में हैं। संघ की जहाज में बैठे हैं। इससे पृथक होने का विचार मस्तिष्क में उत्पन्न भी न हो। अपेक्षा हो तो संघ के लिए प्राण देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

संघपति शासन के प्रतिनिधि होते हैं, शासन के प्रतीक होते हैं, अनुशास्ता होते हैं और संघरूपी जहाज को चलाने वाले होते हैं। इसलिए उनके प्रति भी समर्पण और भक्ति का भाव रहना चाहिए। गुरु भक्ति भी शासन की भक्ति है। गुरु की आज्ञा के प्रति साधु-साध्वियों और समण-समणियों में बहुत अच्छी निष्ठा है। वे किसी क्षेत्र, किसी प्रान्त और किसी देश में रहें, पतंग की भांति आज्ञा की डोर से बंधे हुए रहते हैं। शासनपति का जो इंगित और निर्देश मिल गया, उसे कहीं कोई चुनौती देने का साहस न करे। कोई कठिनाई है तो निवेदन किया जा सकता है। उसके बाद आचार्य का जो भी निर्णय हो, उसे सहर्ष शिरोधार्य करना चाहिए, किन्तु उसे चुनौती देने का भाव मन में कभी न लाएं।'

कार्यक्रम में मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर आयोजित बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता के परिणाम प्रस्तुत किए। आज रात्रि में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद् को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान अध्यक्ष प्रवीण बाबेल आदि ने तेयुप की गतिविधियों की अवगति दी। पूज्यवर ने युवकों को पावन पाथेय प्रदान किया।

अणुव्रत दर्शन परिषद का शुभारंभ

२६ जनवरी। आज प्रातः अहिंसा समवसरण में अणुव्रत दर्शन परिषद का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। श्री उत्तम बोहरा ने अणुव्रत गीत को प्रस्तुति दी। श्री चांदमल बड़ोला एवं श्री ललित बड़ोला ने आगंतुक महानुभावों का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित पंजाब यूनिवर्सिटी के डा. धर्मपाल मैनी एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रो. सोमदत्त दीक्षित ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी, अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमारजी और शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण हुए। परम श्रद्धेय अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'समय की दृष्टि से भारत के दो महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दिनों में १५ अगस्त की तुलना आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा अर्थात तेरापंथ स्थापना दिवस और २६ जनवरी की तुलना माघ शुक्ला सप्तमी, अर्थात मर्यादा महोत्सव के साथ की जा सकती है। भारत की भूमि पर अनेक महापुरुष प्रसूत हुए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी भारत में जन्मे एक ऐसे रत्न थे, जिन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन कर स्वतंत्र भारत को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत अत्राणों का त्राण है और दुःखी मानवता के लिए शान्ति का राजमार्ग है। इस आन्दोलन ने बहुत कार्य किया है। जनता को इस आन्दोलन का आभारी होना चाहिए कि इसके द्वारा जनता में संयम का कुछ विकास हो सका है। परमपूज्य गुरुदेव का यह महान अवदान लगभग बासठ वर्षों से सतत् गतिमान है। इतने प्रलंब काल में तो अनेक आन्दोलन धराशायी हो सकते हैं। इसे और अधिक सक्रिय और उन्नत बनाने का प्रयास करें।'

पूज्य आचार्यवर ने अपनी बात को और आगे बढ़ाते हुए कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष सन्निकट है। उस संदर्भ में अनेक कार्यक्रम प्रकल्पित हैं। उनमें दो कार्यक्रम मुख्य हैं। उन दोनों में भी पहला और प्रमुख कार्यक्रम है जन्म शताब्दी की परिसंपन्नता तक सौ मुनि दीक्षाएं। यह उस महापुरुष के लिए परिपुष्ट श्रद्धांजलि होगी।

दूसरा कार्यक्रम है--अणुव्रत का प्रचार और प्रसार, जनता को अणुव्रती बनाने का प्रयत्न करना। हमारे साधु-साध्वियां, समणश्रेणी और कार्यकर्ता अणुव्रत का कार्य कर रहे हैं। वे आगे भी यह कार्य करते रहें। अणुव्रत दर्शन परिषद के इस त्रिदिवसीय आयोजन में कार्यकर्ता अणुव्रत को और अधिक आगे बढ़ाने का चिंतन करें और इस कार्य में अपनी शक्ति का नियोजन करते रहें।'

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद उधना द्वारा आचार्यवर की मेवाड़ यात्रा में भरवाए गए ६७०० नशामुक्ति के संकल्पपत्र पूज्य चरणों में समर्पित किए गए। आचार्यवर ने इस प्रसंग में कहा--'हमारी मेवाड़ यात्रा में उधना के युवकों ने नशामुक्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। लगभग ६७०० लोगों को नशामुक्त बनाना बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है।'

स्व. कंकुबाई-फौजमल चौधरी परिवार की ओर से संयमलाइफ फाउंडेशन के मंगल आरंभ से पूर्व फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अर्जुनलाल चौधरी एवं सलिल लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी यशोमतीजी की प्रेरणा से भरे गए १०१ बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र जैविभा के उपमंत्री श्री अरविन्द गोठी एवं नितेश बैद ने पूज्य चरणों में उपहृत किए। कार्यक्रम का संयोजन डा. महेन्द्र कर्णावट ने किया।

गणतंत्र दिवस पर मंगल उद्‌बोधन

२६ जनवरी। पूज्य आचार्यवर का प्रातः राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में समायोजित कार्यक्रम में पदार्पण हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय उपखंड अधिकारी श्रीमती कीर्ति राठौड़ द्वारा ध्वजारोहण के उपरान्त छात्राओं द्वारा राष्ट्रगान का संगान किया गया। श्रीमती राठौड़ एवं नगरपालिका अध्यक्ष श्री कैलाश मेवाड़ा द्वारा परेड निरीक्षण के पश्चात् विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने मार्चपास्ट किया और राष्ट्रध्वज को सलामी दी। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री अभय लोढ़ा और श्री कन्हैयालाल चींपड़ ने अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हुए जनोपयोगी घोषणाएं कीं।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'भारत के इतिहास में दो दिन बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। प्रथम है पन्द्रह अगस्त, जब भारत ने सदियों की गुलामी के बाद आजादी की सांस ली। दूसरा है--गणतंत्र दिवस। इस दिन भारत का संविधान प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ था। विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली परेड में देशभक्ति झलक रही है। यह देश ऋषि एवं कृषि भूमि के रूप में जाना जाता है। यहां पर अनेक ऋषियों ने तपस्याएं की हैं। वर्तमान में भी अनेक ऋषि साधना कर रहे हैं। उनकी साधना और तपस्या का प्रभाव रहा है। देश में अनेक विशेषताएं हैं, पर लगता है नागरिकों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा और प्रगाढ़ बने, इसकी अपेक्षा है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में सघन प्रयास किया था। यदि भारत की भूमि पर रहने वाले भूखे न रहें, शिक्षा से वंचित न रहें, नैतिक मूल्यों से दूरी न रखें और देशभक्ति की भावना अक्षुण्ण रहे तो देश स्वर्गतुल्य बन सकता है।'

सीखो, दोहराओ और जीओ

२२ जनवरी की रात्रि का समय। घड़ी की सूई लगभग ८.३० के आसपास चल रही थी। आमेट में लावासरदारगढ़ के कुछ किशोर गुरुदेव की सन्निधि में पहुंचे, वंदना की और बैठ गए।

आचार्यवर ने सहज स्नेह से पूछा--'क्यों, कभी गुस्सा तो नहीं करते?'

किशोर-'सामान्यतः नहीं करते।'

एक किशोर की ओर इशारा करते हुए अन्य किशोरों ने निवेदन किया--'यह बहुत गुस्सा करता है।'

आचार्यवर ने कहा--'देखो, गुस्सा नहीं करना, शान्त रहना। लो, इन सूत्रों को सीखो, दोहराओ और इनके अनुरूप जीने का अभ्यास करो--

बी कोप्रेटिव--सहयोगी बनो। (धार्मिक संदर्भ में)
बी पोलाइट--विनम्र बनो।
बी मर्सीफुल--अनुकंपाशील बनो।
बी ऑनेस्ट--ईमानदार बनो।

और गुरुदेव की यह प्रेरणा बन गई किशोरों के लिए भविष्य निर्माण का बोधपाठ।

स्मृति-संबल

- दिल्ली निवासी श्रीमती तारामणि जैन (धर्मपत्नी-स्व. सुमेरचन्दजी जैन) का देहावसान हो गया। वे दिल्ली के वरिष्ठ श्रावक लाला गिरधारीलालजी की पुत्रवधू थीं। श्री बिरधीचन्दजी गिरधारीलालजी जैन परिवार (कागजी) की धर्मसंघ को बहुत सेवाएं रही हैं। आज भी इस परिवार के कई सदस्य धर्मसंघ की सेवा में संलग्न हैं। श्राविका तारामणि जैन में धर्म के अच्छे संस्कार थे।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्री नेमचन्दजी दूगड़ का संथारे में समाधिमरण हो गया। श्री दूगड़ साध्वी सुविधिप्रभाजी के संसारपक्षीय नानाजी थे। वे एक श्रद्धाशील श्रावक थे।
- बड़ीपादू निवासी सिरकाली-चेन्नई प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री पूसालालजी आंचलिया का अठासी वर्ष की अवस्था में दो दिन के संथारे में स्वर्गवास हो गया। बारहव्रती एवं नियमित सामायिक, ध्यान, रात्रि चौविहार व अनेक त्याग-प्रत्याख्यान रखने वाले पूसालालजी को चार आचार्यों के दर्शन-सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे पिछले चौवन वर्ष से प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करते आ रहे थे। दवा के अतिरिक्त पन्द्रह द्रव्यों से अधिक का द्रव्य परिमाण था। उनकी भावना थी कि अन्तिम समय संथारापूर्वक गुजरे। उनकी यह भावना साकार हुई और सचेतन अवस्था में उन्हें दो दिन का संथारा आया। समणी अचलप्रज्ञाजी एवं समणी मननप्रज्ञाजी की सन्निधि उनके उच्च परिणामों में सहायक बनी। उनके कनिष्ठ पुत्र ज्ञानचन्दजी युवकरत्न हैं और सुपौत्र हरीश सुप्रीम कोर्ट का वकील और संघसेवा में तत्पर निष्ठाशील युवक हैं।
- तिलोली निवासी बारडोली प्रवासी श्रीमती कमलादेवी बाफना (धर्मपत्नी-श्री रिधकरण बाफना) का छह दिन के संथारे में स्वर्गवास हो गया। ४ नवम्बर को बारडोली में प्रवासित मुनि प्रशान्तकुमारजी से उन्होंने संथारे का प्रत्याख्यान लिया। संथारे के दौरान उन्हें पूज्य आचार्यप्रवर एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा के प्रेरक सन्देश

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

प्राप्त हुए। ६ नवम्बर को संथारा संपन्न कर उन्होंने अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। अन्तिम यात्रा में लोग बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

अमृत महोत्सव पर आयोजित बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता के परिणाम

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के मंगल अवसर पर साहित्य समिति द्वारा साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के लिए समायोजित प्रतियोगिता के अन्तर्गत पौष मास में बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में ५६ कहानियां प्राप्त हुईं। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं--

	वरिष्ठ साधुवर्ग	**वरिष्ठ साध्वीवर्ग**	**कनिष्ठ साधुवर्ग**	**कनिष्ठ साध्वीवर्ग**
प्रथम	मुनि राजेन्द्रकुमार	साध्वी सहजयशा	मुनि अनंतकुमार	साध्वी लक्ष्यप्रभा
द्वितीय	मुनि मदनकुमार	साध्वी जगवत्सला	मुनि महावीरकुमार	साध्वी इन्दुयशा
तृतीय	------	साध्वी कमलविभा	मुनि गौरवकुमार	साध्वी मुदिताश्री

इस प्रतियोगिता में मुनि विजयकुमारजी और मुनि मोहजीतकुमारजी ने साधुवर्ग तथा समणी जयंतप्रज्ञाजी और समणी सौम्यप्रज्ञाजी ने साध्वीवर्ग के निर्णायक का दायित्व निभाया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को क्रमशः इकतीस, इक्कीस और ग्यारह कल्याणक तथा शेष सभी संभागियों को नौ-नौ कल्याणक बक्सीस किए।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. शंकरलालजी जीवराजजी बोलिया(बा) की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरदेवी बोलिया एवं समस्त बोलिया परिवार, खरनोटा-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सन् २००१ की गुजरात भूकंप त्रासदी में दिवंगत प्रियजन अमरावदेवी, प्रमोदकुमार, सुनीतादेवी भंसाली की ११वीं वार्षिकी पर भावभीनी स्मृति के साथ हनुमानमल, प्रदीप, सरिता, वर्षा व पारस भंसाली, छापर (राज.) एवं गांधीधाम (कच्छ) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- पूज्य आचार्यवर के सान्निध्य में आगरिया चौराहा (महाश्रमण सर्कल) पर निर्मित 'आचार्य महाश्रमण द्वार' के लोकार्पण के उपलक्ष्य में महेश-रतनदेवी, विनोद-स्नेहलता, भूपेन्द्र, निशा, अनुज, रश्मिका, भावना, भैरव, स्व. श्रीमती कैलाशदेवी-भंवरलालजी (संथारावृत्त) समदरिया परिवार आमेट, द्वारा-वैष्णोदेवी मेटल वर्क्स, बड़ोदा (गुज.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती लीलादेवी नाहर (पुत्रवधू-श्रीमती बदामबाई घीसूलालजी नाहर, धर्मपत्नी-श्री भंवरलालजी नाहर, जोजावर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू मनोजकुमार-दमयंती, नवीनकुमार, सुपौत्री साक्षी व टीसा नाहर, शिमोगा (कर्नाटक) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री लाभचन्दजी चंडालिया (आमेट-पाली) की प्रथम पुण्यतिथि (३१ जनवरी) पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू भूपेन्द्र-ज्योति, दीपक-सरोज, सुपौत्र जिनांक, श्रेयांश चंडालिया, पाली (राज.) द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट

पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : २८-१-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**